रात्रि क्लास 13-12-68:- किसको निश्चय है कि हम भविष्य मे शाहज़ादा बनेंगे? संगम युग ही है जब कि प्रश्न यह पूछते हैं। तुम जानते हो डिनायस्टी की स्थापना हो रही है। तो जरूर स्टुडेन्ट को यह ख्याल होगा हम प्रिन्स बनेंगे। निश्चय वालों को जरूर खुशी अपार होगा। किसको निश्चय है हम यह शरीर छोड़कर प्रिन्स बनुंगा? (सभी ने हाथ उठाया) बच्चों को इतनी खुशी रहती है। तो सभी मे पूरे दैवीगुण होनी चाहिए। जबकि यह निश्चय है। निश्चय बुधि माना विजय माला मे पिरोवन्ती माला का दाना बनती शाहजादा बनती। बच्चों को जब इतनी खुशी है तो बापदादा को भी जरूर होगी। कोई ऐसी भूल करेंगे तो कहूंगा हाथ उठाया था शाहजादा बनुंगा फिर भूल किसी नाजुक करते नो। अच्छे2 बच्चे पुरुषार्थ भी अच्छे दिल से करते हैं। एक दिन होगा जो सभी कान्फरेन्स आबू मे ही आवेंगे और कही नहीं। भारत का राजयोग सीखने। कौन है जिसने पैराडाईज स्थापन किया। कल्प पहले भी हुआ होगा तो जरूर म्युजियम बन जावेगा। यहां प्रदर्शनी हमेशा के लिये लगानी चाहिए। हम भारत की सेवा करते हैं। इससे बहुतों का कल्याण होगा। खास कर जो नजदीक वाले हैं। इसको ईश्वरीय मिशन कहा जाता। पूछे इनका हेड कौन? अरे है ही ईश्वरीय मिशन तो और हेड कौन होगा। तो यह भी यज्ञ मे सफल करनी है। पैसे आदि खर्च आदि की बात नहीं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 14-12-68 :- तुम लोग चाहते होंगे हम जल्दी2 स्वर्ग मे जावें? (नहीं) यहां यह वन्डरफुल है। सतयुग मे फिर भी गृहस्थ व्यवहार हो जावेगा। यह पढ़ाई है वन्डरफुल। देवतायें भी चाहते हैं ब्राह्मणों के साथ रहें। जिनमे ज्ञान नहीं है वह इतना सुख नहीं उठा सकते। नहीं तो पैराडाईज का नाम लालसा होता है जल्दी जावें। परन्तु अभी पढ़ाई कहां पढ़े हैं सभी। ऐसे पढ़े हैं जो राजा बन न सके। राजा बनने लिये कर्मातीत अवस्था चाहिए। यह फिर ड्रामा की बुधि हो जाये। बाप को भी बुलाते हैं आकर पढ़ाओ। तो मुख्य है पढ़ाई। असर करके जो भी आते हैं उनको यह नहीं समझाते हैं सुप्रीम बाप, टीचर गुरु है। जो निश्चय बुधि हो झट ऐसे बाप के पास भागे। देखो कैसे ब्राह्मण बच्चों को पढ़ाते हैं। वन्डर देख भागे। एक ही निराकार बाप है जो बाप टीचर गुरु भी है। और कोई भी आत्मा को ऐसे कह नहीं कहेंगे। सिद्ध होता है कोई भी आत्मा को यह कह नहीं सकते। इनके ऊपर बहुत अच्छी समझानी है। परन्तु बच्चे ऐसे पायन्ट समय पर भूल जाते हैं। बाद मे स्मृति आता है। फिर जो आते हैं उनको समझाया जाता है। जो फिर आते हैं तो समझा जाता है यह अच्छा बच्चा बनेंगे बाप का। आते नहीं तो समझा जाता है देरी से आवेंगे। बाकी आने वाले तो सभी हैं। पलैन्स (नक्शा) भी स्टुडेन्ट को अच्छा मदद करती है। कहां उन्हों की पलेन कहां तुम्हारा। पहले यह चित्र नहीं था। तुमको बाप की कशिश हुई तब भागे। फिर बहुतों को समझाने लिये यह बने हैं। तुम समझा सकते हो देवताओं को मन की शांति है। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही उन्हों को मिलती है। तुम समझते हो युध के मैदान मे युध करते रहते हैं और रचयिता और रचना का नालेज समझकर नास्तिक को आस्तिक बनाते रहते हैं। बेहद के बाप को तुम जानते हो मानते हो। दोनों बाप को मानते हो जानते हो। सभी बच्चों आत्माओं का बाप है। सर्व की सदगति दाता है बाप। बच्चे मीठे हैं बाप की सेवा करते हैं तो खुश होते हैं। याद की यात्रा का तो हरेक खुद जाने। याद करते होंगे तो अपना ही कल्याण करते होंगे। योग है गुप्त। बताते हैं तो मालूम पड़ता है। अगर लिखते ही नहीं हैं तो कैसे मालूम पड़ेगा। सर्जन को सभी बिमारी सुनानी जरूर पड़े। तो 100% बुधि होने से छूट जावेंगे। नहीं तो बुधि होते2 फिर पक्के हो जाते हैं। जैसे जेल वर्डस हो जाते हैं। यह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की समझानी अभी ही मिलती है। सभी तमोप्रधान हैं। असलिये सतोप्रधान बनने जरूर हैं। एक ही बाप कहते हैं यह 5 तत्व भी पावन बनने वाले हैं। अभी प्रकृति तमो० है यह सतोप्रधान बनने हैं। सतोप्र० तमोप्र० मे रात दिन का फर्क है। परन्तु पत्थर बुधि तमोप्रधान होने कारण समझते नहीं हैं। मनुष्यों को यह पता नहीं है ल०ना० हो तमो० बनते हैं। विकार मे जाते हैं तो निर्विकारियों को माथा टेकते हैं। पूज्य से पुजारी कैसे बनते हैं। तो समझेंगे अभी सतो० जरूर बनना है। हम सो भी समझानी भी जरूर देंगे तो होंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।